पैदा करेगी। अतः दोनों में से एक लेज़र पुंज का मार्ग विचलित हो जाएगा। अब जब इन दोनों पुंजों को वापिस जोड़ा जाएगा तो इनकी आपसी क्रिया से जो इंटरफरेंस पैटर्न बनेगा वह सामान्य से अलग होगा। इस आधार पर तरंग होने का पता चल सकता है।

अभी लाइगो उपकरणों की संवेदनशीलता कम है। शोधकर्ता उम्मीद करते हैं कि संवेदनशीलता को 100 गुना बढ़ा पाएंगे। वर्तमान संवेदनशीलता पर प्राप्त अवलोकनों से गुरुत्व तरंगों की उपस्थिति का कोई प्रमाण नहीं मिला है। लेकिन इन अवलोकनों से कई और बातें पता चली हैं। जैसे यह स्पष्ट हुआ है कि हमारी आकाशगंगा में प्रति वर्ष 164 से कम न्यूट्रॉन तारे एक-दूसरे में विलीन होते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि हमारी निहारिका में प्रतिदिन औसतन 1.4 से कम सुपरनोवा जैसे विस्फोट होते हैं। वैज्ञानिकों को विश्वास है कि उपकरणों की संवेदनशीलता बढ़ने पर ज़्यादा सकारात्मक नतीजे सामने आएंगे। *(स्रोत फीचर्स)*

# युद्ध के बाद इराक का पर्यावरण

युद्ध और पर्यावरण का सम्बंध इराक में प्रत्यक्ष रूप से सामने है मगर अभी इसका विस्तृत आकलन नहीं हो सकता क्योंकि अमरीकी गठबंधन किसी को भी इराक में घुसने की इजाज़त नहीं दे रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा किए गए एक मेज़ी आकलन के अनुसार इराकी पर्यावरण व जनजीवन पर यह खतरा मूलतः गठबंधन सेना की गतिविधियों के कारण पैदा हुआ है। यू.एस. वायुसेना के अनुसार युद्ध के दौरान इराक पर सत्ताईस हज़ार बम गिराए गए थे। इनमें 800 से ज़्यादा क्रूज़ मिसाइलें भी थीं। इसके अलावा फौजी वाहनों की आवाजाही के कारण रेगिस्तान की नाजुक इकोसिस्टम पर व्यापक असर हुए होंगे। युद्ध से पहले कहा गया था कि इराक अपने तेल के कुओं में आग लगा देगा या रासायनिक व जैविक हथियारों का इस्तेमाल करेगा। मगर ये बातें बेबुनियाद साबित हुईं।

राष्ट्र संघ का मत है कि इस समय इराकी पर्यावरण को सर्वाधिक खतरा बिखरे पड़े विषैले कचरे, तहस-नहस रासायनिक व हथियार कारखानों, इधर-उधर पड़े गोला-बारूद तथा प्रदूषित नदियों से है। इन सबका आकलन करके सफाई अभियान चलाना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

हाल ही में युनिसेफ ने खबर दी है कि बगदाद में दस्त की महामारी फैल गई है। युनिसेफ के मुताबिक शहर के अस्पताल में 4 घण्टे के अंदर 300 मरीज़ पहुंचे। युनिसेफ का यह भी अनुमान है कि यदि हालात ऐसे ही रहे तो जल्दी ही इराक के जल शोधन संयंत्रों में ज़रूरी रसायनों का अभाव पैदा हो जाएगा। तब दस्त जैसे रोगों में नाटकीय वृद्धि का खतरा पैदा होगा।

राष्ट्र संघ के खाद्य व कृषि संगठन का अनुमान है कि इराक में बसंत में कटने वाले अनाज की फसलों तथा सब्ज़ियों में भारी कमी आने की संभावना है क्योंकि बिजली सप्लाई अस्त-व्यस्त हो चुकी है और नदियों से सिंचाई करने के लिए लगे पम्प बेकार पड़े हैं।

राष्ट्र संघ का आग्रह है कि पुनर्निर्माण का कोई भी कार्यक्रम शुरू करने से पहले पर्यावरण समस्या का आकलन तत्काल ज़रूरी है। इसके लिए राष्ट्र संघ के दल का वहां पहुंचना अनिवार्य है। पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम के दल ने युद्ध की स्थिति में पर्यावरण आकलन का अच्छा काम किया है। इसमें सब लोगों के सहयोग की अपेक्षा होती है। मगर अमरीका टस से मस नहीं हो रहा है। *(स्रोत फीचर्स)*